B.A. HINDI HONOURSE PART – 3

PAPER – 8

"काव्य प्रयोजन"

Dr. Nand Kishore Pandit

Asst. Prof. Hindi

APSM College, Barauni

काव्य प्रयोजन

काव्य प्रयोजन का अर्थ होता है -काव्य के उद्देश्य। काव्य के आधार पर हमें जो प्राप्त होता है, उसे ही साहित्य प्रयोजन कहा जाता है। हर वस्तु का अपना विशिष्ट प्रयोजन होता है। साहित्य का सृजन एवं पठन-अध्ययन भी स्वद्देश्य होता है। सृजक तथा पाठक साहित्य से विशिष्ट प्रयोजन की अपेक्षा रखता है। देश-कल और युग प्रवृत्तियों, रुचियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप यह प्रयोजन बदलता रहा है। वैसे साहित्य का प्रयोजन उसके स्वरूप, उसकी प्रकृति पर निर्भर करता है। भारतीय तथा पाश्चात्य दृष्टिकोण अनुसार इसमें भिन्नता देखी जा सकती है। भारतीय दृष्टि आध्यात्मिक होने के कारण इसमें आध्यात्मिकता को आधार बनाकर काव्य प्रयोजन स्पष्ट किए गए है। तो पाश्चात्य दृष्टिकोण भौतिकवादी होने के कारण वह भौतिक सुखों को प्रधानता देते है।

भारतीय विद्वानों द्वारा प्रस्तुत साहित्य प्रयोजन

संस्कृत के आचार्यों द्वारा प्रस्तुत साहित्य प्रयोजन संस्कृत के आचार्यों ने सृजक तथा पाठक दोनों को दृष्टि में रखते हुए काव्य प्रयोजन पर विचार किया है। इस दृष्टि से सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि के *'नाट्यशास्त्र'* का उल्लेख होता है। किंतु नाट्यशास्त्र में नाम के अनुरूप ही नाट्य प्रयोजनों की चर्चा की गई है। भरतमुनि के अनुसार-

"दुखार्तांना श्रमार्तांना शोकर्तांना तपस्विनाम
विश्रामजनन लोके नाट्यमेतद भविष्यति।"

अर्थात दुख, श्रम, शोक से आर्त तपस्वियों के विश्राम के लिए ही लोक में नाट्य का उद्भव हुआ है। अन्य एक स्थल पर काव्य प्रयोजनों की ओर इंगित करते हुए वे लिखते है, कि धर्म, यश, आयु वृद्धि, हित-साधन, बुद्धि-वर्धन एवं लोकोपदेश ही नाट्य प्रयोजन है। आचार्य भरत के बाद आचार्य भामह काव्यालंकार में दो बातों को आधार बनाकर काव्य प्रयोजन की चर्चा करते है - १. कवि एवं पाठक को आधार मानकर २. केवल कवि को आधार मानकर। कवि ओर पाठक को आधार मानकर काव्य प्रयोजन को स्पष्ट करते हुए वे कहते है -

"धर्मार्थ - काम-मोक्षेषु वैचभण्यं कलासुच
करोति कीर्ति प्रीतिच साधु काव्यनिवेषणम।"

अर्थात धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, कलाओं में विलक्षणता पाना, कीर्ति और आनंद की उपलब्धि ही काव्य का प्रयोजन है। जहां तक कवि का काव्य रचना के प्रयोजन से संबंध है, आचार्य भामह के अनुसार सत्काव्य की रचना करके कवि यश की अमरता प्राप्त करता है।

आचार्य दण्डी ने वाणी का महत्व प्रतिपादित करते हुए काव्य रचना के दो प्रयोजनों को स्वीकारा है - १. ज्ञान की प्राप्ति और २. यश की प्राप्ति।

आचार्य वामन ने कर्ता की दृष्टि से काव्य प्रयोजन पर प्रकाश डाला है। इन्होंने दृष्ट और अदृष्ट रूप में काव्य के दो प्रयोजन माने है। प्रीति या आनंद की साधना एवं कवी को कीर्ति प्राप्त कराना आदि को काव्य प्रयोजन माना है।

आचार्य रुद्रट ने 'यश' को अधिक महत्व दिया है। साथ ही वे अनर्थ का नाश और अर्थ की प्राप्ति को भी काव्य का प्रयोजन मानते है। अनर्थ के नाश से पाठक और श्रोता सुख-आनंद की प्राप्ति करता है।

आचार्य आनंदवर्धन आनंद की प्राप्ति को काव्य का प्रयोजन मानते है। दूसरे शब्दों में रसास्वादन को वे काव्य का प्रमुख प्रयोजन मानते है। आचार्य अभिनवगुप्त, आचार्य कुंतक आदि ने भी काव्य प्रयोजनों पर अपने विचार व्यक्त किए है। इन सभी में आचार्य मम्मट का दृष्टिकोण समन्वयवादी रहा है। वे कहते है -

"काव्य यशसेर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये
सद्यःपरिनिर्वृत्तये कांतासम्मितयोपदेश युजे।"

अर्थात काव्य का प्रयोजन यश, अर्थ -प्राप्ति, व्यवहार की शिक्षा देना और जीवन के शिव पक्ष की रक्षा करना है। इसक साथ *"सद्यःपरिनिर्वृत्तये"* अर्थात काव्य पढते ही शांति अर्थात आनंद की प्राप्ति होती है। तथा कांता (पत्नी) के समान उपदेश करना भी काव्य के प्रयोजन है।

आ. भरतमुनि से लेकर आ.मम्मट तक के विद्वानों ने काव्य प्रयोजनों को जिस रूप में स्वीकारा है, वे निम्नानुसार है -

1. **चर्तुवर्ग फलप्राप्ति -**

जीवन की सफलता चार पुरुषार्थ -धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में मानी गई है। आदिकालीन साहित्य का प्रयोजन अर्थ प्राप्ति रहा है। धर्म, काम, तथा मोक्ष लेखक और पाठक दोनों के लिए है। अर्थ प्राप्ति सृजक निष्ठ प्रयोजन है। मध्यकालीन हिंदी साहित्य के पूर्वार्द्ध अर्थात भक्तिकाल में धर्म और मोक्ष प्रयोजन के रूप में रहे है। तो उत्तरार्ध अर्थात रीतिकाल अर्थ के प्रति आग्रही रहा है। आधुनिक कालीन समाज धर्म और मोक्ष की अपेक्षा अर्थ और काम की ओर अधिक झूका हुआ दिखाई देता है।

2 . यशप्राप्ति -

लगभग सभी संस्कृत आचार्यों ने यशप्राप्ति को साहित्य का प्रयोजन स्वीकार किया है। आचार्य रुद्रट ने इस प्रयोजन पर विशेष रूप से ध्यान दिया है। यश मनुष्य जीवन की उदात्त और सर्वोपरि कामना है। यश प्राप्ति की कामना हर कवि में होती है। अन्यथा प्रत्येक रचना के साथ कवि या लेखक अपना नाम न लिखता। आदिकाल, रीतिकाल के रचनाकार यश प्राप्ति के लिए लिखते रहे। भक्तिकाल के कवि भी यश कामना से रहित नहीं थे। आधुनिक रचनाकारों में भी यश कामना प्रबल रूप में विद्यमान है। प्राप्त यश, प्रशंसा और अधिक लिखने के लिए प्रवृत्त करती है।

3 . व्यवहार ज्ञान -

आचार्य भरतमुनि, आ. भामह, आ. कुंतक तथा आचार्य मम्मट इस प्रयोजन का प्रतिपादन करते है। यह पाठक निष्ठ प्रयोजन है। यह प्रयोजन जीवन के वास्तविक सत्य को पहचानने के लिए एक नई दृष्टि प्रदान करता है। अपने भौतिक यथार्थ का साक्षात्कार भी वह कराता है।

4 . अमंगल का नाश-

आचार्य मम्मट ने शिवेतरक्षतये के रूप में दैहिक और भौतिक अमंगल के नाश को साहित्य का प्रयोजन माना है। भक्तिकालीन कवि दैहिक, दैविक, भौतिक अमंगल के नाश के लिए साहित्य का सहारा लेता है। धार्मिक ग्रंथ रामचरितमानस भी ग्रंथ पठन के बाद फल की लंबी सूची प्रस्तुत करता है। वैसे आज के वैज्ञानिक युग में इस प्रयोजन की कोई विशेष प्रासंगिकता नहीं रही है। मात्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानसिक असंतुलन से मुक्ति तथा सुधारवादी दृष्टि से सामाजिक अमंगजल का नाश साहित्यिक प्रयोजन कहे जा सकते है।

5. आनंदप्राप्ति -

इसे भी लगभग सभी संस्कृत आचार्यों ने काव्य का प्रयोजन माना है। काव्यानंद द्विविध प्रयोजन है। सृजन की प्रक्रिया के दौरान सृजक तथा पठन-आस्वादन के दौरान पाठक इसके अधिकारी होते है। काव्यानंद को ही ब्रम्हानंद सहोदर कहा गया है। सृजनात्मकता का आनंद भौतिक सुखानुभूति से नितांत भिन्न होता है। इसलिए उसे अलौकिक आनंद भी कहा जाता है।

6. कांतासम्मितयोपदेशयुजे -

आचार्य मम्मट ने यह लेखकनिष्ठ प्रयोजन माना है। पत्नी के समान मधुर उपदेश देना भी काव्य का एक प्रयोजन है। मध्यकालीन एवं अन्य संतों की रचनाएं भी इसी कोटी में आती है। जिस प्रकार पत्नी का उपेदश सीधा न होकर मधुर भाषा में तथा प्रच्छन्न रूप में होता है, उसी प्रकार साहित्यकार का भी उपदेश होता है। संक्षेप में भारतीय आचार्य आनंद-आल्हाद को साहित्य का प्रमुख प्रयोजन मानते है। तथा अपने युगीन साहित्य तथा परिवेश के अनुरूप साहित्य की प्रकृति के अनुकुल अन्य प्रयोजनों को भी समाविष्ट करने का प्रयास हुआ है।